ऋषभवेद जयंती, 11 मार्च 2018 के अवसर पर प्रासंगिक आलेख-

आज अधिक प्रासंगिक हैं तीर्थंकर ऋषभदेव की शिक्षाएं

प्रतिवर्ष चैत्रकृष्ण नवमी को ऋषभ जयंती समुदाय में हर्ष, उल्लास के साथ श्रद्धा पूर्वक मनायी जाती है । इस दिन जैनधर्म के आदि प्रवर्तक तीर्थंकर ऋषभदेव (आदिनाथ) का जन्म हुआ था । चौदहवे कुलकर नाभिराय राजा और उनकी पत्नी मरूदेवी से चैत्रकृष्ण नवमी के दिन मति, श्रुत और अवधिज्ञान के धारक पुत्र का जन्म अयोध्या में हुआ था । इन्द्रों ने बालक का समेरू पर्वत पर अभिषेक महोत्सव करके 'ऋषभ' नाम रखा । जैन परम्परा में मान्य चौबीस तीर्थंकरों की श्रृंखला में भगवान ऋषभदेव का नाम प्रथम स्थान पर एवं अंतिम तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामी हैं । विश्व के प्राचीनतम लिपिबद्ध धर्म ग्रंथों में से एक वेद में तथा श्रीमद्भगवत इत्यादि में आये भगवान ऋषभदेव के उल्लेख तथा विश्व की लगभग समस्त संस्कृतियों में ऋषभदेव की किसी न किसी रूप में उपस्थिति जैनधर्म की प्राचीनता और भगवान ऋषभदेव की सर्वमान्य स्थिति को व्यक्त करती है । जैन परंपरा के अनुसार तीर्थंकर आदिनाथ प्रथम तीर्थंकर हैं, जिन्होनें मानव जाति को पुरूषार्थ का उपदेश दिया । अपने जीवन निर्माण के लिए, परिवार, राष्ट्र के लिए उन्होनें कर्म का उपदेश दिया । मानव जाति से उन्होनें कहा कि- तुम पुरूषार्थ के द्वारा अपनी समस्याओं को हल कर सकते हो, इस दृष्टि से विभिन्न कलाओं का निरूपण किया । साम्राज्य का भी त्याग किया, तप, त्याग के द्वारा कैवल्य प्राप्त किया । वीतराग, निराकार हो गये । धर्म के उपदेश द्वारा समाज का सृजन किया । परमात्मा के रूप में **'बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय', 'सर्वे भविन्तु सुखिनः'** को साकार करते रहे ।

भगवान आदिनाथ के बारे में श्रद्धासुमन अर्पित करते हुए भारत के राष्ट्रपति डॉ. शंकरदयाल शर्मा ने कहा था- ''मैनें विश्व के तथा अपने देश के करीब-करीब सभी धर्मों का थोड़ा बहुत अध्ययन किया है । जैन धर्म की अनेक सैद्धांतिक और व्यवहारिक बातों ने मुझे प्रभावित किया है । जैनधर्म के प्रवर्तक भगवान ऋषभदेव की यह प्रतिमा दिखाई दे रही है, इसे मैं कई अर्थों में जैन सिद्धांतों का प्रतीक मानता हूँ। इस प्रतिमा की विशालता, अपने शाश्वत और भव्य स्वरूप में उपदेश दे रही है, हमें अपने हृदय को इतना विशाल बनाना है संकीर्ण विचारों स्वार्थ लिप्सा की वृत्ति से ऊपर उठकर उदात्त बनाना है । श्री मद्भागवत के पांचवे स्कंध में अध्याय 2 से 6 में ऋषभदेव का वर्णन मिलता है । इसमें अपने पुत्रों को दिये उनके उपदेश का उल्लेख है । यह गौरव की बात है कि इन्हीं प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव के ज्येष्ठ पुत्र भरत के नाम से इस देश का नामकरण 'भारतवर्ष' इन्हीं की प्रसिद्धि के कारण विख्यात हुआ । इतना ही नहीं, अपितु कुछ विद्वान भी संभवत: इस तथ्य से अपरिचित होंगे कि आर्यखण्ड रूप इस भारतवर्ष का एक प्राचीन नाम नाभिखण्ड 'अजनाभवर्ष' भी इन्हीं ऋषभदेव के पिता 'नाभिराय' के नाम से प्रसिद्ध था । ये नाभि और कोई नहीं, अपितु स्वायुंभव मनु के पुत्र प्रियव्रत और प्रियव्रत के पुत्र नाभि थे । नाभिराय का एक नाम 'अजनाभ' भी था । स्कंधपुराण में कहा है- 'हिमाद्रिजलधरेन्तर्नाभिखण्डमिति स्मतम' - 1/2/37/55 । उल्लेखनीय है । हाल ही में कर्नाटक के श्रवणबेलगोला में जो गोमटेश्वर बाहुबली भगवान का महामस्तकाभिषेक का विशाल आयोजन हुआ जिसका शुभारंभ महामहिम राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद ने किया, वह बाहुबली और कोई नहीं तीर्थंकर ऋषभदेव के ही पुत्र थे । जैनधर्म के प्रवर्तक प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव इस विश्व के लिए उज्जवल प्रकाश हैं । उन्होनें कर्मों पर विजय प्राप्त कर दुनिया को त्याग का मार्ग बताया । भगवान ऋषभदेव की शिक्षाएं मानवता के कल्याण के लिए हैं, उनके उपदेश आज भी समाज के विघटन, शोषण, साम्प्रदायिक विद्वेष एवं पर्यावरण प्रदूषण को रोकने में सक्षम एवं प्रासंगिक हैं ।

भारतीय संस्कृति के प्रणेता एवं जैनधर्म के प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव की जनकल्याणकारी शिक्षा द्वारा प्रतिपादित जीवन-शैली, आज के चुनौती भरे माहौल में उनके सामाजिक एवं राजनीतिक विचारों की प्रासंगिकता है । तीर्थंकर ऋषभदेव अध्यात्म विद्या के भी जनक रहे हैं ।

सामाजिक संरचना में उन्होनें प्रजाजनों को तीन श्रेणियों में विभाजित करते हुए उनको अपने अपने कर्त्तव्य, अधिकार तथा उपलब्धियों के बारे में प्रथम मार्गदर्शन किया । सर्वांगीण विकास के मूल आधारभूत तत्वों का विवेचन कर वास्तविक समाजवादी व्यवस्था का बोध कराया । प्रत्येक वर्ण व्यवस्था में पूर्ण सामंजस्य निर्मित करने हेतु तथा उनके निर्वाह के लिए आवश्यक मार्गदर्शक सिद्धांत, प्रतिपादन करते हुए स्वयं उसका प्रयोग या निर्माण करके प्रात्याक्षिक भी किया । अश्व परीक्षा, आयुध निर्माण, रत्न परीक्षा, पशु पालन आदि बहत्तर कलाओं का ज्ञान प्रदर्शित किया । उनके द्वारा प्रदत्त शिक्षाओं का वर्गीकरण कुछ इस प्रकार से किया जा सकता है-

1. असि-शस्त्र विद्या, 2. मसि-पशुपालन, 3. कृषि-खेती, वृक्ष, लता वेली, आयुर्वेद, 4. विद्या- पढ़ना, लिखना, 5. वाणिज्य-व्यापार-व्यवसाय 6. शिल्प- सभी प्रकार के कल्याणकारी कार्य ।

जैन परंपरा के अनुसार तीर्थंकर ऋषभदेव ने कृषि का सूत्रपात किया । अनेकानेक शिल्पों की अवधारणा की । कृषि और उद्योग में अद्भुत सामंजस्य स्थापित किया कि धरती पर स्वर्ग उतर आया । कर्मयोग की वह रसधारा बही कि उजड़ते और वीरान होते जन जीवन में सब ओर नव बसंत खिल उठा । जनता ने उन्हें अपना स्वामी माना और धीरे-धीरे बदलते हुए समय के अनुसार वर्ण व्यवस्था, दण्ड व्यवस्था, विवाह आदि सामाजिक व्यवस्था का निर्माण हुआ ।

ऋषभदेव ने महिला साक्षरता तथा स्त्री समानता पर भी महत्वपूर्ण कार्य किया है । अपनी दोनों पुत्रियों को ब्राही को अक्षर ज्ञान के साथ-साथ व्याकरण, छंद, अलंकार, रूपक, उपमा आदि के साथ स्त्रियोचित अनेक गुणों के ज्ञान से अलंकृत किया । लिपि विद्या को ऋषभदेव ने विशेष रूप से ब्राह्मी को सिखाया। इसी के आधार पर उस लिपि का नाम ब्राह्मी लिपी पड़ गया । ब्राह्मी लिपी विश्व की आद्य लिपी है । दूसरी पुत्री सुंदरी को अंकगणतीय ज्ञान से पुरस्कृत किया । आज भी उनके द्वार निर्मित व्याकरणशास्त्र तथा गणितिय सिद्धांतों ने महानतम ग्रंथों में स्थान प्राप्त किया है । आज जब भारत सरकार बेटी पढ़ाओ, बेटी बढ़ाओ का अभियान चला रही है, ऐसे में ऋषभदेव द्वारा अपनी पुत्रियों को दी गयी शिक्षा और अधिक प्रासंगिक हो जाती है । उनके द्वारा दी गयी बेटियों के शिक्षा संदेश को यदि अमल में लाया जाय तो इस अभियान में क्रांतिकारी परिवर्तन देखने को मिलेंगे । प्रशासनिक कार्य में इस भारत भूमि को उन्होनें राज्य, नगर, खेट, कर्वट, मटम्ब द्रोण मुख तथा संवाहन में विभाजित कर सुयोग्य प्रशासनिक, न्यायिक अधिकारों से युक्त राजा, माण्डलिक, किलेदार, नगर प्रमुख आदि के सुपुर्द किया । आपने आदर्श दण्ड संहिता का भी प्रावधान कुशलता पूर्वक किया । -डॉ. सुनील जैन 'संचय'

महावीर जयंती पर विशेष - विश्ववंद्य पतित उद्धारक

''स्यादवादो वर्त्तते यस्मिन पक्षपातो न विद्यते ।
नास्तन्य पिड़िन किंचते जैन धर्मः स उच्चते ।।''

अर्थात् जिसकी वाणी में स्यादवाद है, जो किसी के साथ पक्षपात नहीं करता, साथ ही जहां किसी को पीड़ा न पहुंचाने की बात है वह जैन धर्म है ।

भारतवर्ष वह तपोभूमि है जिसने अनेकों ऋषियों मनिषियों, संतों एवं महामानवों को जन्म दिया है जिन्होनें स्वार्थ, लोभ, अराजकता और हिंसा में झुलसते समाज को समय-समय पर उचित मार्गनिर्देश दिया है । वर्तमान युग लगभग उन्हीं परिस्थितियों एवं वातावरण से गुजर रहा है जैसा कि छठि शताब्दी में था अर्थात् देश में असत्य का बोलबाला था, चारों ओर हिंसा व्याप्त थी, धर्म के नाम पर कर्मकांड और पाखंड व्याप्त था । संसार में व्याप्त तृष्णा, अनीति एवं हिंसा में झुलसते समाज के लिए एक ऐसे महापुरुष की आवश्यकता थी जो अहिंसा, सत्य, अस्तेय, अपरिग्रह, अनेकांतवाद के आलोक में लोगों के हृदय अंधकार को दूर कर सके । ठीक ऐसे ही समय आज से 2600 वर्ष पूर्व कुंडलपुर नगर के राजा सिद्धार्थ के घर भगवान महावीर का जन्म हुआ । वे जन्मत: स्वस्थ, सुन्दर, आकर्षक व्यक्तित्व वाले थे । डरना तो उन्होनें सीखा ही नहीं था, वे साहस के पुतले थे। अत: उन्हें बचपन से ही वर्धमान, वीर, अतिवीर, सन्मति, तीर्थंकर आदि नाम से पुकारते थे । बाल्यकाल से ही उनके घर में धन-धान्य की अत्यधिक वृद्धि हुई थी । अत: माता-पिता ने उनका नाम वर्धमान रखा । आत्मज्ञानी होने से उन्हें सन्मति कहते थे । संसार समुद्र और स्व-पर के तरण तारण होने से उन्हें तीर्थंकर कहते थे । बाल्यकाल से ही उन्होनें अपनी प्रवृत्तियों को परिष्कृत एवं परिमार्जित करने का प्रयास किया । वे आत्मज्ञानी, विचारवान एवं विवेकी थे । महावीर ने लोक जीवन में व्याप्त बुराइयों का अध्ययन किया । भगवान महावीर ऐसे समाज की रचना करना चाहते थे जहां किसी प्रकार का भेदभाव न हो, मानव मात्र समान हों, सभी को जीने का अधिकार हों । भगवान महावीर ने अपने उपदेशों में अहिंसा को प्रथम स्थान दिया । महावीर के इसी अहिंसा के बल पर महात्मा गांधी ने भारत जैसे विशाल देश को अंग्रेजों के अत्याचार से मुक्ति दिलायी थी । वर्तमान युग में बढ़ते हुए आतंकवाद, उग्रवाद एवं हिंसा से बढ़ते हुए खतरों से बचने के लिये आज भगवान महावीर के अहिंसा और स्यादवाद की अत्यंत आवश्यकता हैं । अहिंसा से आचार शुद्धि और स्यादवाद से विचार शुद्धि बताई गई हैं अर्थात् जिसका आचार विचार जितना शुद्ध होगा उतना ही वह अनात्मा से आत्मा की ओर एवं परमात्मा की ओर बढ़ेगा ।

भगवान महावीर का धर्म सर्वोदय तीर्थ कहलाया क्योंकि यहाँ सभी प्राणियों को संसार सागर से संतरण करने का मार्ग दर्शाया गया है । वर्तमान में भगवान महावीर के सभी सिद्धांत - * अहिंसा परमोधर्म * जियो और जीने दो, * परस्परोपग्रहो जीवानाम्, * मित्तीमेसव्वभूएसु । अर्थात संसार के सभी प्राणी मेरे मित्र है । विशुद्ध नैतिक धर्म मय जीवन के लिए एवं समस्त विभिषिकाओं से बचने के लिए सार्थक है ।

भगवान महावीर की देन 'अनेकांतवाद' से वैचारिक वैमनस्य दूर होगा । इसी तरह अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य एवं अपरिग्रह से कई समस्याओं का समाधान होगा । भगवान महावीर ने पर्यावरण सुरक्षा के भी निर्देश दिये थे । आज विश्व में आण्विक एवं रासायनिक शस्त्रों की होड़ सी हो रही है, जो घातक है । भगवान महावीर ने इस बात को पहले ही समझ लिया था । उन्होने कहा ''शास्त्रों में एक से बढ़कर एक हो सकते है पर अशस्त्र अहिंसा से बढ़कर और कुछ नहीं हैं ।''

भगवान महावीर के सभी सिद्धांतों की वैज्ञानिक युग में संपुष्टि हो रही है, आज आवश्यकता है उसके चिन्तन और मनन की । आज के पदार्थवादी युग में और तनावग्रस्त जीवन में मानव यदि सुख से जीना चाहता है तो आवश्यकता है कि भगवान महावीर की वाणी एवं उनका दर्शन व्यक्ति के जीवन का पाथेय हो । भगवान महावीर के जन्मदिन को मनाने और उनके प्रति अपनी आस्था समर्पित करने की सार्थकता उनके उपदेशों को आत्मसात करने में है । भारतीय मानसिकता ऐसे महापुरूषों के प्रति सहज भाव से श्रद्धाशील है ।

''विश्ववंद्य, पतित उद्धारक,
अहिंसा के अवतार भगवान महावीर की जय।''

- डॉ. प्रतिभा जैन (भाचावत), इन्दौर